क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास
करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

मुख्य प्रश्न:

यूहन्ना 11:25–26 में यीशु कहते हैं:

“मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ। जो मुझ में विश्वास करता है,
वह चाहे मर जाए, फिर भी जीवित रहेगा।
और जो जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं
मरेगा। क्या तुम इसे मानते हो?”
— यूहन्ना 11:25–26 (HB)

“कभी नहीं मरेगा” का अर्थ वास्तव में क्या है? आइए इसे विस्तार से समझें।

संदर्भ और व्याख्या

यीशु केवल मृत्यु के बाद जीवन की आशा नहीं दे रहे थे। वे यह दिखा रहे थे कि सच्चे विश्वास का अर्थ क्या है। इसे समझने के लिए हमें अनन्त जीवन की प्रकृति और विश्वास की गहराई को देखना होगा।

क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास
करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

1. यीशु ही पुनरुत्थान और जीवन का स्रोत हैं

यीशु खुद को पुनरुत्थान और जीवन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे केवल जीवन लाने वाले नहीं, जीवन स्वयं हैं (यूहन्ना 1:4; 14:6)। वे जीवन का वृक्ष हैं जिसे ईडन में देखा गया था (उत्पत्ति 2:9; प्रकाशितवाक्य 2:7), और जो उनके साथ जुड़ता है उसे अनन्त जीवन प्राप्त होता है।

“जो शब्द मैं तुमसे कहता हूँ, वह आत्मा है और वह जीवन है।”
— यूहन्ना 6:63 (HB)

इस संदर्भ में मृत्यु और जीवन केवल शारीरिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक स्थिति हैं। जहाँ यीशु, जो जीवन हैं, वहाँ मृत्यु की कोई शक्ति नहीं।

यूहन्ना 11:25–26 में दो प्रकार के विश्वासियों का उल्लेख

यीशु के समय दो प्रकार के विश्वासियों की बात की गई थी, जो विश्वास के अलग-अलग स्तर पर थे:

A. वे जो शारीरिक रूप से मरते हैं लेकिन आध्यात्मिक रूप से जीवित रहते हैं

क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास
करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

“जो मुझ में विश्वास करता है, वह चाहे मर जाए, फिर भी जीवित रहेगा।”
— यूहन्ना 11:25 (HB)

यह उन विश्वासियों की ओर इशारा करता है जो शारीरिक रूप से मरते हैं, लेकिन उनके विश्वास के कारण आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में जीवित रहते हैं। उनकी आत्मा स्वर्ग में प्रवेश करती है और अंतिम पुनरुत्थान का इंतजार करती है (लूका 23:43; फिलिप्पियों 1:23)।

उनका विश्वास वास्तविक था, लेकिन पूरी तरह परिपक्व विश्वास तक नहीं पहुँचा था, जैसा कि इफिसियों 4:13 में कहा गया है:

“…ताकि हम सभी विश्वास की एकता और परमेश्वर के पुत्र का
ज्ञान प्राप्त कर, पूर्ण पुरुष बनें, मसीह की पूर्णता के अनुसार परिपक्व हों।”
— इफिसियों 4:13 (HB)

आज भी कई लोग इस समूह में आते हैं। वे यीशु से प्रेम करते हैं और

क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास
करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

उनका पालन करते हैं, लेकिन उनकी आध्यात्मिक वृद्धि सीमित होती है। वे शारीरिक रूप से मरते हैं, फिर भी आध्यात्मिक रूप से जीवित रहते हैं।

B. वे जो जीवित हैं और मृत्यु का अनुभव नहीं करेंगे

“जो जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या तुम इसे मानते हो?”
— यूहन्ना 11:26 (HB)

यह उन विश्वासियों की ओर इशारा करता है जो गहरी आस्था, परिपक्वता और आज्ञाकारिता के माध्यम से शारीरिक मृत्यु को भी पार कर लेते हैं। उनका जीवन मसीह में इतना घुलमिल जाता है कि मृत्यु का उन पर कोई अधिकार नहीं रहता।

यह केवल मृत्यु के बाद आध्यात्मिक जीवन का वादा नहीं है, बल्कि शारीरिक मृत्यु से भी बचने की संभावना है। उदाहरण:

एनोख, जिसने “परमेश्वर के साथ चला; और वह नहीं रहा, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया” (उत्पत्ति 5:24 HB)
एलियाह, जिन्हें मृत्यु के बिना स्वर्ग में रथ द्वारा उठाया गया (2 राजा 2:11 HB)

क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास
करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

चर्च का अपहरण, जो मसीह के लौटने पर “हवा में प्रभु से मिलने के लिए उठाए जाएंगे” (1 थिस्सलुनीकियों 4:17 HB)

यीशु ने इसे यूहन्ना 8:51–53 में पुनः स्पष्ट किया

“सत्य-सत्य मैं तुमसे कहता हूँ, जो मेरा वचन मानता है, वह कभी मृत्यु नहीं देखेगा।”
— यूहन्ना 8:51 (HB)

यहूदी इसे समझ नहीं पाए और बोले:

“अब हम जानते हैं कि तुझ में एक दानव है! अब्राहम और भविष्यद्वक्ता तो मर गए; और तू कहता है, ‘जो मेरा वचन मानता
है वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं लेगा।’”
— यूहन्ना 8:52 (HB)

वे केवल शारीरिक मृत्यु के बारे में सोच रहे थे, लेकिन यीशु दूसरी मृत्यु, यानी परमेश्वर से अनन्त पृथक्करण (प्रकाशितवाक्य 20:6,14 HB) की बात कर रहे थे।

क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास
करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

सच्चे विश्वासियों, जो यीशु का वचन मानते हैं, वे मृत्यु से जीवन में पारित हो जाते हैं:

“सत्य-सत्य मैं तुमसे कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनता है और
जिसने मुझे भेजा उस पर विश्वास करता है, उसके पास अनन्त जीवन
है; वह न्याय के दंड में नहीं आएगा, पर मृत्यु से जीवन में
पारित हो चुका है।”
— यूहन्ना 5:24 (HB)

क्या आज शारीरिक मृत्यु से बचना संभव है?

हाँ। मत्ती 16:28 में यीशु ने कहा:

“सत्य-सत्य मैं तुमसे कहता हूँ, यहाँ खड़े कुछ लोग हैं, जो मृत्यु का स्वाद नहीं लेंगे, जब तक कि वे मानव पुत्र को उसके राज्य में आते न देखें।”
— मत्ती 16:28 (HB)

यह दर्शाता है कि परमेश्वर हमेशा कुछ विश्वासियों को ऐसा जीवन

क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास
करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

देता है, जो उसकी निकटता में चलते हैं और उसे मृत्यु से बचाता है।

चर्च का अपहरण इस वादे की अंतिम पूर्ति होगी। जो विश्वासी जीवित और पूरी तरह तैयार होंगे, उन्हें मृत्यु का अनुभव किए बिना उठाया जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:51–52 HB)।

आध्यात्मिक परिपक्वता आवश्यक है

सभी विश्वासियों को यह अनुभव नहीं होगा। कई अभी भी भय, संदेह या समझौते में रहते हैं। इसलिए यीशु ने पूछा:

“…जब मानव पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास
पाएगा?”
— लूका 18:8 (HB)

वह कमजोर या आंशिक विश्वास की तलाश नहीं कर रहे। वह परिपक्व, विजयी और पूरी तरह उनके साथ मेल खाने वाली चर्च की प्रतीक्षा कर रहे हैं (इफिसियों 5:27 HB)।

क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास
करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

निष्कर्ष

हाँ, यीशु का अर्थ वही था जो उन्होंने यूहन्ना 11:26 में कहा।
जो लोग उस पर विश्वास करते हैं और पूर्ण विश्वास में उसके वचन पर चलते हैं, वे कभी नहीं मरेंगे—न केवल आध्यात्मिक रूप से, बल्कि संभवतः शारीरिक रूप से भी। जैसे एनोख और एलियाह, और जैसे अपहरण की चर्च, मसीह में परिपक्व विश्वास से मृत्यु पर विजय संभव है।

यह शिक्षा हमें प्रेरित करती है कि हम:

मसीह के साथ अपने संबंध को गहरा करें
आज्ञाकारिता और पवित्रता में चलें
केवल मूल विश्वास नहीं, बल्कि विश्वास की पूर्णता की तलाश करें

“धन्य और पवित्र है जो पहले पुनरुत्थान में भाग लेता है; उन
पर दूसरी मृत्यु का कोई अधिकार नहीं है…”
— प्रकाशितवाक्य 20:6 (HB)

ईश्वर आपकी आस्था में वृद्धि करें और जब यीशु लौटेंगे तो आपको तैयार पाएँ।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

क्या यीशु वास्तव में कहना चाहते थे कि अगर हम उस पर विश्वास करें तो हम कभी नहीं मरेंगे? (यूहन्ना 11:25–26)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

Share on:
WhatsApp